Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ हलषष्ठी व्रत कथा ॥

॥ षष्ठी माता सबका मंगल करें ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ हरछठ की प्रचलित कथा ॥

ग्वालिन और उसके बच्चे की प्रचलित लोककथा का सरल हिंदी रूपांतरण। कथा का उद्देश्य सत्य और करुणा का भाव समझाना है, किसी वास्तविक अनिष्ट का दोष माता पर लगाना नहीं।

बहुत समय पहले एक ग्वालिन गाँव-गाँव दूध, दही और मक्खन बेचकर अपना घर चलाती थी। वह गर्भवती थी और प्रसव का समय निकट था। एक दिन सामान लेकर निकलते हुए उसे मार्ग में प्रसव पीड़ा हुई। उसने झरबेरी की झाड़ियों के पास एक बच्चे को जन्म दिया।

सामान बेचने की चिंता में उसने नवजात को कपड़े में लपेटकर सुरक्षित समझे गए स्थान पर रखा और शीघ्र लौटने का विचार करके गाँव चली गई। उस दिन हरछठ का व्रत था। कुछ व्रती महिलाएँ अपनी परंपरा के अनुसार गाय के दूध से बनी चीजें नहीं ले रही थीं।

ग्वालिन के सामान में गाय और भैंस दोनों के दूध का मिश्रण था, फिर भी उसने उसे केवल भैंस के दूध का बताकर बेच दिया। महिलाएँ उसकी बात पर विश्वास कर गईं। सामग्री बिक जाने पर ग्वालिन लौटने लगी; रास्ते में उसे अपनी कही झूठी बात याद आई और मन बेचैन हुआ।

उधर झाड़ियों के पास खेत जोत रहे किसान का हल अनजाने में बच्चे के पास पहुँच गया। बच्चे को चोट लगी तो किसान घबरा गया। ग्वालिन जब वहाँ लौटी तो बच्चे की दशा देखकर बहुत दुःखी हुई।

॥ सच स्वीकार करना और क्षमा ॥

ग्वालिन को लगा कि उसने व्रत रखने वाली महिलाओं से असत्य कहा था। वह वापस गाँव गई और सबको सच-सच बताया कि दूध और दही में गाय का दूध भी मिला था। उसने अपने छल के लिए क्षमा माँगी। महिलाओं ने उसका दुःख सुना और उसे सांत्वना दी।

लोककथा के अनुसार, जब ग्वालिन बच्चे के पास फिर पहुँची तो वह सकुशल मिला। उसने हरछठ माता को प्रणाम किया और भविष्य में सामान बेचते समय सच बोलने तथा बच्चे की देखभाल में सजग रहने का संकल्प लिया।

कथा का संदेश

कथा हमें सामान के बारे में ईमानदारी बरतने, नवजात की सुरक्षा को सबसे पहले रखने और संकट में सहारा देने की सीख देती है। किसी बच्चे की चोट या बीमारी को माँ की गलती की सजा न मानें। ऐसी स्थिति में तुरंत उचित चिकित्सा सहायता और परिवार का सहयोग आवश्यक है।

संतान के लिए प्रार्थना

हरछठ पर माताएँ अपने बेटे-बेटियों के स्वस्थ और सुरक्षित जीवन की कामना करती हैं। कई क्षेत्रों में षष्ठी माता की पूजा होती है; कुछ स्थानों पर भगवान बलराम के जन्मोत्सव से भी यह तिथि जुड़ी है। परिवार में जो रूप प्रचलित हो, उसी को श्रद्धा से अपनाएँ।

॥ षष्ठी माता सबका मंगल करें ॥